वर्तमान का बेशकीमती क्षण

वर्तमान का परिचय अभी के क्षण में मिलता है। वर्तमान का समस्त स्वरूप अभी के क्षण में निखरता है। अभी के क्षण में संभावनाओं का अनूठापन है। संभावनाएँ जो आगे घटित होने वाली हैं, वे अभी के क्षण में सिमटी हुई हैं, समायी हुई हैं। अभी के क्षण में अनंत उपलब्धियों की धरोहर छिपी है। इतनी सारी संभावनाओं एवं उपलब्धियों को समाए हुए वर्तमान को हम न जाने क्यों बिसराए रहते हैं और वर्तमान के यथार्थ को छोड़कर गहरी भ्रांति में जिए चले जाते हैं।

वर्तमान का बेशकीमती क्षण 'अब' अर्थात् अभी के इस पल में छिपा हुआ है, परंतु मन इस वर्तमान में नहीं टिक पाता है, बल्कि अतीत की यादों या भविष्य के सपनों की यात्रा पर निकल पड़ता है। जो बीत चुका है, जो हमारे हाथ से निकल चुका है और जो कभी वापस नहीं आ सकता है, हम उसी अतीत की भ्रांति में पड़े रहते हैं। अतीत के पल बिसराए नहीं बिसरते हैं। अतीत की यादों में, बीती हुई

अतीत व भविष्य मन के लिए एक गहरा नशा है, जो मन को सुप्त कर देता है, सुला देता है, उसे बाहर नहीं निकलने देता है, होश में नहीं आने देता है। मन उस नशे में चूर रहता है, और यह जीवन की यथार्थता से पलायन की विधि है। इन भ्रांतियों से जो स्वयं को मुक्त कर लेता है, वह वर्तमान की महिमा एवं महत्व को पहचान लेता है।

बातों में हम बिसरते रहते हैं। मन उन यादों से चिपका रहता है और उनके बाहर निकल ही नहीं पाता है, बल्कि उन्हीं यादों के इर्द-गिर्द घूमता रहता है।

अतीत के पन्नों में खोया हुआ मन, अतीत को खोकर वर्तमान को भी खोता रहता है, क्योंकि वह वर्तमान के क्षण को जी नहीं पाता है। इस दुरावस्था में वह वर्तमान को खोता चला जाता है। एक और बात है कि यदि अतीत की यादें सुनहरी, सुखद एवं स्वर्णिम हों तो वर्तमान के लिए प्रेरणादायी हो सकती हैं। वर्तमान उस सुनहरे अतीत से सीख ले सकता है, प्रेरित हो सकता है और उसके आधार पर अपने वर्तमान क्षण का श्रेष्ठतम सदुपयोग कर सकता है। परंतु ऐसा होता कम है; क्योंकि हमारा मन अतीत की सुकोमल यादों को इतना याद नहीं करता, जितना कि उसकी कड़वी यादों की कड़वाहट से चिपका रहता है। जब भी मन पीछे की ओर लौटता है, तब उन विषम एवं दु:खद यादों को साथ लाकर वर्तमान के क्षणों को भी असहनीय कर बैठता है। इसलिए कहते हैं कि मन दु:ख से चिपका रहता है, उसे छोड़ता ही नहीं है।

वर्तमान क्षण को जी लिया जाए, तो ही इसकी सम्पूर्ण एवं समग्र सार्थकता है। वर्तमान का क्षण या तो अतीत की भ्रांतियों से क्षत-विक्षत होता है, या फिर भविष्य की भ्रांति में असहज होता है। मन का स्वभाव है कि या तो वह पीछे मुड़ता है या आगे बढ़ता है। पीछे मुड़ने में उसे सहजता होती है; क्योंकि उस पल को वह जी चुका है या फिर भविष्य के सपने बुनता है, संकल्पना करता है, जो कि अभी आया नहीं है। भविष्य के सपने बुनने में अधिक कोई परेशानी नहीं होती ; क्योंकि उसे कुछ करना नहीं पड़ता है। कोई संघर्ष नहीं है वहाँ, कोई चुनौती नहीं है वहाँ, केवल बैठे-बैठे सपना ही तो देखना है। भविष्य का सपना देखना आसान है, और जहाँ आसानी है, करना कुछ नहीं पड़ता, वहाँ मन विभिन्न कपोल-कल्पनाओं में खोकर अपने वर्तमान को खो देता है।

अतीत की यादों की भ्रांतियाँ हों या भविष्य की भ्रांतियाँ – दोनों ही हमें कार्यों से विमुख रखती हैं व पुरुषार्थ से हमको दूर करती हैं। कर्म करने के लिए, पुरुषार्थ के पुरस्कार के लिए वर्तमान के क्षण में जीना पड़ता है। वर्तमान में जिए बगैर न तो कर्म किया जा सकता है, और न ही पुरुषार्थ किया जा सकता है। कर्मयोगी, तपस्वी, पुरुषार्थी आदि सभी न तो अपने अतीत के पलों में भटकते हैं और न ही भविष्य के सपने बुनते हैं, बल्कि वे तो वर्तमान क्षण पर अपना ध्यान एकाग्र करते हैं।

जो अपनी समस्त सामर्थ्य एवं ऊर्जा को इसी वर्तमान के क्षण में नियोजित कर देता है, खपा देता है, वही इस पल का सदुपयोग कर पाता है, क्योंकि ऐसा नहीं कर पाने के कारण वर्तमान का क्षण, अतीत के गहरे गर्त में समा जाता है। वर्तमान क्षण तो पल भर में ही अतीत का सहचर हो जाता है, लेकिन कर्मयोगी पुरुषार्थी अतीत का भाग होने से पहले उसका श्रेष्ठतम सदुपयोग कर लेते हैं।

कर्म करने के लिए वर्तमान के क्षण में ही जीना पड़ता है। इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं है। जीवन जैसा भी है, उसमें उसे जीना और जूझना ही पड़ता है, साथ ही उसकी जटिलताओं व यथार्थ को भी स्वीकार करना पड़ता है। वर्तमान क्षण की चुनौती, संघर्ष एवं कठिनाइयों से जो भागता फिरता है, वही पलायनवादी है। पलायनवादी अपने वर्तमान क्षण की समस्याओं का समाधान करने के बजाय उनसे बचना चाहता है, इसीलिए भागता रहता है। पलायनवादी को कभी यह समझ नहीं आता है कि वह जितना भागेगा, समस्याएँ उतनी ही गहरी होती जाएंगी। सत्य यही है कि वर्तमान क्षण की जटिलताओं से, और उसकी समस्याओं का समाधान किए बिना आगे एक कदम भी बढ़ना संभव नहीं है।

वर्तमान से भागने से उसे सपनों की रात्रि तो मिल सकती है, रात्रि में अनेक सुखद सपनों को तो वह सजा सकता है, मदहोश होकर इधर-उधर भागता फिरता रह सकता है, पर जागरण का सूर्योदय, जागृति की स्वर्णिम किरणें उसे नहीं मिल पाती हैं। सूर्योदय की सुनहरी आभा नहीं मिल पाती है, और न ही उसका अनुभव ही हो पाता है। ऐसा नहीं है कि सपने केवल सोते हुए ही दिखते हैं, जागते हुए भी हमारा मन इन्हीं स्वप्नों में तैरता-उतरता रहता है। इस प्रकार अतीत और भविष्य के हिंडोलों में वह हिलता-डुलता रहता है। दरअसल अतीत व भविष्य मन के लिए एक गहरा नशा है, जो मन को सुप्त कर देता है, सुला देता है, उसे बाहर नहीं निकलने देता है, होश में नहीं आने देता है। मन उस नशे में चूर रहता है, और यह जीवन की यथार्थता से पलायन की विधि है। इन भ्रांतियों से जो स्वयं को मुक्त कर लेता है, वह वर्तमान की महिमा एवं महत्व को पहचान लेता है। वर्तमान का क्षण कर्म के लिए, जागरण के लिए, नवजीवन के लिए है, भ्रांति मुक्त होने के लिए है, सभी व्यर्थताओं को छोड़ने के लिए है।

हुबली-गांधीनगर(कर्नाटक)। आर.पी.एफ. पुलिस के सदस्यों के लिए 'स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड मेडिटेशन क्लास' के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. लता, ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ आर.पी.एफ कमिश्नर मल्लिकार्जुन,साउथ-वेस्टर्न रेलवे तथा आर.पी.एफ. के जवान।

सहरसा-बिहार। नवनिर्मित 'शांति अनुभूति भवन' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. रानी बहन, ब्र.कु. अंजू , ब्र.कु. अनिता, सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. स्नेहा व अन्य बहनें।

दिल्ली-सीता राम बाज़ार। दीपावली के अवसर पर निगम पार्षद राकेश जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता। साथ हैं ब्र.कु. गुंजन।

सक्ती-छ.ग.। 'बेटी जन्म प्रोत्साहन सम्मान समारोह' में जनसेवा क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु ब्रह्माकुमारीज़ की ब्र.कु. तुलसी एवं ब्र.कु. शिवकुमारी को प्रशस्ति पत्र एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करते हुए विधायक डॉ.खिलावन साहू, पूर्व कृषि राज्यमंत्री मेधाराम साहू, महिला आयोग की हर्षिता पाण्डे तथा अन्य गणमान्य लोग।

मथुरा-उ.प्र.। एस.पी. ए.के. सिंह को माउण्ट आबू में होने वाले एडमिनिस्ट्रेटिव कॉन्फ्रेन्स में आने का निमंत्रण एवं प्रोग्राम फोल्डर देते हुए ब्र.कु. कृष्णा बहन।

सूरत-उधना(गुज.)। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. रचना तथा ब्र.कु. हेतल।

राजकोट-रविरत्नापार्क। दीपावली तथा नव वर्ष पर आयोजित भव्य कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. डिम्पल, ब्र.कु. विधि तथा ब्र.कु. भाई बहनें।